जेड की शिला



चीनी लोककथा

सम्पूर्ण चीन के महान सम्राट ने चैन-लो को आदेश दिया की वह जेड की एक उत्तम शिला से 'आंधी और आग के ड्रैगन' की मूर्ति बनाये. मूर्ति बनाने से पहले चैन उस शिला से जानना चाहता है कि वह क्या बनना चाहती है:

ओ जेड की उत्तम शिला

तुम को देना है रूप नया,

पर धीमे से बतलाओ मुझको

भीतर तुम्हारे छिपा है क्या.

जेड की शिला से चैन को एक आवाज़ सुनाई देती है- 'पह-तह, बूब-बुब्ब-बुब्ब्ल, शश्श्श्श'. यह किसी ड्रैगन की आवाज़ न थी. क्या सम्राट के आदेश की अवहेलना करते हुए, चैन वह बनाएगा जो शिला बनना चाहती है और सम्राट से दंड, शायद मृत्यु दंड, पायेगा? या फिर सम्राट स्वयं उस जेड की शिला की अंतरात्मा की बात समझ लेंगे?

चीन की यह लोक कथा कला की सच्चाई के बारे में एक सुंदर शिक्षा देती है.

जेड की शिला

चीनी लोककथा





द्वितीय मंत्री
तृतीय मंत्री
प्रथम मंत्री
सम्राट
शाही राजदूत
महारानी
शाही संतरी
शाही घुड़सवार
पेकिनेस



जेड की मूर्ति
चैन लो, मूर्तिकार
शिक्षार्थी
दर्शक
बधाई देनेवाला
उद्घोषक
पालकी वाला
बैंड



सैंकड़ों वर्ष पहले चीन में चैन-लो नाम का एक मूर्तिकार रहता था. नदी किनारे जो रंग-बिरंगे पत्थर उसे मिलते थे उन्हें तराश कर चैन-लो पक्षियों, हिरणों और भैंसों की मूर्तियाँ बनाया करता था.

“आप कैसे जान लेते हैं कि किस पत्थर से कौन सी मूर्ति बनानी है?” उसके युवा शिक्षार्थी ने पूछा.

“मैं सदा पत्थर की बात सुनता हूँ,” चैन-लो ने उत्तर दिया. “हर पत्थर मुझे बता देता है कि वह क्या बनना चाहता है.”

दूर-दूर से लोग चैन-लो की बनाई मूर्तियाँ खरीदने आते थे.







फिर ऐसा हुआ कि सम्पूर्ण चीन के महान सम्राट को जब हरे और सफेद रंग की जेड की एक उत्तम शिला भेंट में मिली तब सम्राट के एक मंत्री को चैन-लो का ध्यान आया.

सीधा-सादा चैन-लो सम्पूर्ण चीन के महान सम्राट के सामने उपस्थित हुआ.

उसने झुक कर सम्राट का अभिवादन किया.

“हम चाहते हैं कि जेड की इस शिला से ‘आंधी और आग के ड्रैगन’ की मूर्ति बनाओ,” सम्राट ने आदेश दिया

“आपकी इच्छा पूरी करने का

मैं पूरा प्रयास करूंगा,”

चैन-लो ने कहा.





सम्राट के सेवक उस अनमोल शिला को चैन-लो की वाटिका में ले आये.

चैन-लो ने जेड की इतनी उत्तम शिला आज तक न देखी थी. उसका हरा और सफेद रंग ऐसा लगता था जैसे बर्फ में काई घुल-मिल गई हो.

महान सम्राट का आदेश था कि ‘आंधी और आग का ड्रैगन’ की मूर्ति बनाई जाए. पर चैन लो सोच में था कि क्या वह शिला ड्रैगन बनना चाहती थी.



उसने शिला से कहा:

"ओ जेड की उत्तम शिला

तुम को देना है रूप नया,

पर धीमे से बतलाओ मुझको

भीतर तुम्हारे छिपा है क्या."

चैन-लो ने झुक कर शिला के साथ अपना कान लगाया. पत्थर के भीतर से एक कोमल आवाज़ आई, "पह-तह," आवाज़ आती रही, "पह-तह, पह तह, पह तह."

"क्या ड्रैगन ऐसी आवाज़ निकालते हैं?" चैन-लो सोच में पड़ गया.

शायद जब ड्रैगन अपनी पूँछ सागर में इधर-उधर पटकते हैं तो "पह-तह, पह तह," की आवाज़ आती है. पर उसे पक्का पता न था.

उस शाम चैन-लो ने चावल के बने केक खाये और चाय पी. वह ड्रैगनों के बारे में सोचता रहा.

सोते समय उसे स्वप्न में भी "पह-तह, पह तह," की आवाज़ सुनाई दी.



अगली सुबह चैन-लो अपनी वाटिका में आया. सुबह के प्रकाश में जेड की शिला चश्मे के हरे पानी जैसी दिख रही थी. चैन-लो ने कहा:

"ओ जेड की उत्तम शिला

तुम को देना है रूप नया,

पर धीमे से बतलाओ मुझको

भीतर तुम्हारे छिपा है क्या."

चैन-लो ने हरे-सफ़ेद रंग वाली शिला के साथ अपना कान लगाया और ध्यान से सुनने लगा. बहुत कोमल आवाज़ें आईं. "बूब-बुब्ब-बुब्बल," उसने फिर सुना, "बूब-बुब्ब-बुब्बल."

"क्या ड्रैगन ऐसी आवाज़ निकालते हैं?" चैन-लो ने अपने आप से पूछा. "शायद उछलती-मचलती लहरों से बाहर आते समय एक ड्रैगन अपने नथुनों से ऐसे ही बुलबुले फूंकता होगा."

पर यह किसी विशाल, ताकतवर ड्रैगन के बुलबुले फूँकने की आवाज़ न थी. यह तो बहुत कोमल और मस्ती से भरी आवाज़ थी.

चैन-लो का मन भारी हो गया. उसे सम्राट के ड्रैगन की आवाज़ अभी तक सुनाई न दी थी.

उस रात भी चैन-लो ने चावल के बने केक खाये और चाय पी. फिर उसने ड्रैगनों के बारे में सोचा.





लेकिन जब उसे नींद आई तो सपने में उसे "बूब-बुब्ब-बुब्ब्ल," की आवाज़ सुनाई दी.

आधी रात को वह नींद से जाग उठा. वह अपनी वाटिका में आया. चाँदनी रात थी और चाँद के प्रकाश में शिला रुपहले-हरे रंग सी चमक रही थी.

उसने अंतिम बार उस शिला की आवाज़ सुनने का प्रयास किया.

"ओ जेड की उत्तम शिला
तुम को देना है रूप नया,
पर धीमे से बतलाओ मुझको
भीतर तुम्हारे छिपा है क्या."

उसने अपना कान शिला पर लगा दिया.

उसे कोई आवाज़ सुनाई न दी.

चैन लो ने शिला पर अपना हाथ रखा. उसे उस शिला पर कुछ लकीरें महसूस हुई. "श्श्श, श्श्श्श, शश्श्श्श," उसकी अँगुलियाँ उस शिला की लकीरों पर चलने लगीं.

क्या ड्रैगनों के शरीर पर ऐसी लकीरें होती हैं?

"हाँ," उसने कहा, "उनके शरीर पर शल्क (स्केल) होते हैं. उन शल्कों को अगर कोई छूने का साहस करे तो उन्हीं से ही 'श्श्श, श्श्श्श, शश्श्श्श,' की आवाज़ आती होगी."

पर चैन-लो को यह भी लग रहा था कि शिला की कोमल लकीरें ड्रैगन के शल्कों जैसी नहीं थीं.

शिला जो बनना चाहती थी उसके अतिरिक्त कोई और मूर्ति चैन-लो नहीं बना सकता था. पर सम्राट के आदेश की अवहेलना करने में उसे डर लगता था. भयभीत मन से उसने उस शिला को तराशना शुरू कर दिया.



बहुत ध्यान से और सावधानी के साथ वह एक वर्ष और एक दिन तक उस शिला को तराशता रहा.

आखिरकार मूर्ति बन गयी. एक सुबह पक्षियों के जागने से पहले चैन-लो और उसके शिक्षार्थी ने जेड की उस मूर्ति को एक कपड़े में लपेट लिया और उसे लेकर सम्राट के दिव्य महल की ओर चल दिए.





चैन-लो ने महल के विशाल हॉल में प्रवेश किया जहां तीन मंत्री बैठे सम्राट की प्रतीक्षा कर रहे थे.

हॉल के बीच में रखे एक मेज़ पर उसने वह जेड की शिला रख दी.

सम्राट के मंत्री बहुत उत्सुक थे. वह झटपट शिला के पास दौड़े आये और कपड़े के भीतर झाँकने लगे.



"ड्रैगन नहीं है," एक मंत्री फुसफुसाया.

"ड्रैगन नहीं है," दूसरा चिल्लाया.

"ड्रैगन नहीं है," तीसरा चीखा.

तभी सम्राट ने उस विशाल हॉल में प्रवेश किया.

" 'आंधी और आग का ड्रैगन' हमें दिखाओ," सम्राट ने आदेश दिया.

मंत्रियों ने एक साथ शिला पर रखा कपड़ा हटा दिया.

"यह हमारा ड्रैगन नहीं है," सम्राट गरजा. क्रोध से उसकी आँखें लाल हो गयी थीं. उसकी आवाज़ बादलों की गर्जन जैसी थी.

"इसे दंड दो! इसे दंड दो! इसे दंड दो!" तीनों मंत्री एक साथ बोले.

“ओ शक्तिशाली सम्राट, यह ‘आंधी और आग का ड्रैगन’ नहीं हैं,” चैन-लो बोला. उसके टाँगे सूखे पत्तों समान कांप रहीं थीं. “मुझे शिला में ड्रैगन की आवाज़ सुनाई ही न दी. मुझे तो तीन कार्प मछलियों की आवाज़ सुनाई दी थी जो इस दिव्य महल के तालाब में सरकंडों की बीच मस्ती से तैर रहीं थीं.”

“सुनाई नहीं दी? तुम्हें सुनाई नहीं दी!” सम्राट के शब्द अंगारों समान थे. “इसे कैद खाने में डाल दो.”

दो सिपाही चैन-लो को पकड़कर खींचते हुए ले गये और महल के नीचे एक अँधेरी कोठरी में उसे फैंक दिया.



सम्राट ने आदेश दिया कि उस जेड की शिला को दिव्य महल से हटा कर बाहर रख दिया जाए. उस मूर्ति को एक तालाब के पास रख दिया गया. तालाब में सरकंडे उगे हुए थे.

तीनों मंत्री सम्राट के निकट इकट्ठे हो गये.

“उसका सर कटवा दें,” एक ने कहा.

“उसे उबलते तेल में डलवा दें,” दूसरा बोला.

“उसके छोटे-छोटे टुकड़े करवा दें,” तीसरा बोला.



पर सम्राट इतने गुस्से में था कि तय ही न कर पाया कि चैन-लो को क्या दंड दिया जाए.

“हम अपने सपनों को यह निर्णय लेने देंगे,” सम्राट ने कहा.

उस रात सम्राट ने सपने में एक मछली देखी जो मस्ती से हरे पानी में अपनी पूंछ पटक रही थी, ‘पह-तह, पह-तह.”

सुबह मंत्रियों ने सम्राट से पूछा, “आपने कौन-सा दंड चुना है?”

“मेरे सपनों ने अभी कोई निर्णय नहीं लिया,” सम्राट ने कहा.



दूसरी रात सम्राट ने सपने में एक मछली देखी जो गहरे, निर्मल पानी में मज़े से तैर रही थी, “बूब-बुब्ब-बुब्ब्ल, बूब-बुब्ब-बुब्ब्ल.”

अगली सुबह फिर मंत्रियों ने फिर पूछा, “आपके सपनों ने कौन सा दंड चुना,”

“मेरे सपनों ने अभी कोई निर्णय नहीं लिया,” सम्राट ने कहा.





तीसरी रात सम्राट बेचैन रहा और सारी रात बिस्तर में करवट वह बदलता रहा. आधी रात के समय वह उठ बैठा. उसे एक अनोखी आवाज़ सुनाई दी. "श्श्श, श्श्श्श, शश्श्श्श्श."

सम्राट बिस्तर से उठ कर उस ओर आया जहां से यह आवाज़ आ रही थी. उसने तेज़ी से गलियारे पार किये. फिर विशाल हॉल से होता हुआ चाँद के प्रकाश में जगमगाते बाग़ में आया. वहां चाँदनी में चमकते तालाब के पास जेड की शिला थी. उसके पास मूर्तिकार का शिक्षार्थी खड़ा था. शिक्षार्थी तीन कार्प मछलियों के शल्कों पर अपनी अंगुलियाँ चला रहा था. "श्श्श, श्श्श्श, शश्श्श्श्श."

कार्प मछलियों के शल्क चाँद के प्रकाश में चमक रहे थे. मछलियों के चिकने शरीर पानी में प्रतिबिंबित हो रहे थे. ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मछलियाँ अपनी पूंछ पटक कर सरकंडों में तैरना शुरू कर देंगी.

तालाब के निकट बैठ कर सम्राट जेड की शिला को एकटक देखता रहा. सूर्य उदय के समय ही मंत्रियों ने सम्राट को कार्प मछलियों को इसी तरह निहारते पाया.



“सम्राट, आपके सपनों ने कौन सा दंड चुना है?” उन्होंने पूछा.

महान सम्राट बड़े अभिमान के साथ मुस्कराया.

“चैन-लो को हमारे समक्ष उपस्थित करो,” सम्राट ने कहा.







चैन-लो ने झुक कर सम्पूर्ण चीन के महान सम्राट का अभिवादन किया. वह कठोर दंड पाने को तैयार था.

“चैन-लो, तुम ने हमारे आदेश का उल्लंघन किया, पर तुम ने सम्पूर्ण चीन के महान सम्राट की अवज्ञा करने का साहस भी दिखाया,” सम्राट ने कहा. “तुम ने उन मछलियों की मूर्ति बनायी जो शिला के अंदर थीं. मैंने भी उनकी आवाज़ सुनी है. वह तीनों कार्प मछलियाँ किसी भी ‘आंधी और आग के ड्रैगन’ से हमें अधिक प्रिय हैं. तुम्हें क्या पुरस्कार चाहिये?”

चैन-लो थोड़ा और झुक गया. “महान सम्राट, आपकी प्रसन्नता ही मेरा सबसे बड़ा पुरस्कार है. मैं अपने गाँव लौट कर वही बनाना चाहता हूँ जिसकी आवाज़ मुझे पत्थरों में सुनाई दे.”

“तुम अवश्य वही मूर्ति बनाओगे जिसकी आवाज़ तुम्हें सुनाई देगी,” सम्राट ने कहा. “तुम उस सम्मान के साथ गाँव जाओगे जो सम्मान सम्पूर्ण चीन के महान सम्राट के प्रमुख मूर्तिकार को मिलना चाहिये.”



吹打手
觀者
石匠老爹
賀者
謀士丙
學徒
謀士乙
觀者
馬



1917 में एक व्यापारी मिस्टर ए. एल. गम्प बीजिंग, चीन में अपनी सैन फ्रांसिस्को की दुकान के लिए जेड पत्थर खरीदने गए. तब एक शाही आदमी ने उसे सम्राट और जेड पत्थर की खुदाई करने वाले एक कारीगर की कहानी सुनाई. मिस्टर गम्प के बेटे रिचर्ड ने यह कहानी अपनी किताब जेड – *स्टोन ऑफ़ हेवन* में सुनाई. उस कहानी को सुनने के बाद मैं उसे कभी भूल नहीं पाया और उस पर ही आधारित मैंने यह चित्रकथा लिखी.

